ओ३म्

आर्य्य मार्तण्ड

❖❖ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक ❖❖

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प – आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क, जयपुर

वर्ष: 87 अंक 14
चेत्र शुक्ला दसमी
विक्रम संवत 2070
कलि संवत 5115
21 अप्रैल 5 मई 2013 तक
दयानन्दाब्द 189
सृष्टि सम्वत् 1, 96, 08, 53, 114

मुख्य सम्पादक :
पं. अमर सिंह आर्य, 9214586018
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

संपादक मंडल:
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री सत्यव्रत सामवेदी
श्री बलदेव राज आर्य
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री, अलवर
श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति
श्रीमती सरोज वर्मा
श्रीमती अरूणा सतीजा
श्री सत्यपाल आर्य
श्री बृजेन्द्र देव आर्य

प्रकाशक:
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
राजापार्क, जयपुर
दूरभाष- **0141-2621879**
प्रकाशन: दिनांक 1 व 15

पत्र व्यवहार का अस्थाई पता
अमर मुनि वानप्रस्थी
सम्पादक आर्य मार्तण्ड, सेढ़ का टीला
केडलगंज, अलवर (राज.)
मोबाईल- 9214586018

मुद्रक:
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशियेट्स,जयपुर

ग्राफिक्स :
भार्गव प्रिन्टर्स, दारुकूटा, अलवर
Email: bhargavaprinters@gmail.com
Email:aryamartand@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया

आत्मा का शुद्धीकरण ही सम्यक तप है

''तप क्या है? तप किसे कहते हैं? साधारण भाषा में तप को तपस्या कहा जाता है। तप का मतलब महज भूखा रहना नहीं है। जब ज्ञानपूर्वक तप किया जाता है, तब वह हकीकत में तप कहलाता है। यदि किसी बीमारी के कारण डॉक्टर या वैद्य ने भूखा रहना कह दिया, धर के झगड़े या तनाव में भोजन नहीं किया अथवा अन्य किसी कारण से रोटी नहीं खाई और भूखा रहना पड़ गया, तब वह तप नहीं है। यदि धन, बेटा, नौकरी, पद, निरोग होने या किसी का अहित करने अथवा संसार की अन्य किसी भी भौतिक इच्छा व कामना को लेकर तप किया गया तो वह सम्यक तप नहीं है। शरीर पर ध्यान रखकर किया जाने वाला कभी तप नहीं हो सकता बल्कि वह महज 'डाईटिंग' है। जो ज्ञान व विवेक के साथ सिर्फ अपनी आत्मा के शुद्धीकरण के ध्येय को लेकर तप करता है, वह सम्यक तप है। तप का मतलब अपनी आत्मा पर भव-भव से चिपके अपने अशुभ कर्मों को क्षय करना है। ऐसी पवित्र भावना के साथ भले ही फिर व्यक्ति पूरे दिन का उपवास नहीं करता हो वरन् छोटी सी भी यदि कोई तपस्या करता है तो उस सम्यक तप से आत्मा को असीम शांति अनुभव होगी। ऐसे तप से ही सच्चानंद प्राप्त होता है और इसे गरीब-अमीर सब कर सकते है। करना ही चाहिए क्योंकि मनुष्य योनी में ही तप किया जा सकता है। तप से ही आत्मा निर्मल होकर एक दिन संसार चक्र से मुक्त भी हो सकती है।' यदि कोई यह समझ कर तप करता है कि मेरा नाम हो, मेरा मान-सम्मान बढे, वह तप नहीं है। तप करने के बाद भी यदि अंदर से मन में किसी का अहित सोचा जा रहा है, गुस्सा, क्रोध, राग-द्वेष किया जा रहा है, घमण्ड और अहंकार भाव बने हुए है, फिर भूखे रहकर भले ही आप महिने-महिनों तक की तपस्या कर ले, उसका कोई महत्व नहीं है। मोक्ष का संबंध आत्मा से है और भूख का संबंध शरीर से है। अगर छोड़ने के बाद भी कषाय नहीं छूट पाते और भीतर की समाधी ना आ पाए, फिर वह तप निरर्थक है। जब ज्ञानपूर्वक तप किया जाता है, तब उससे कर्मों का क्षय होता है। उसे ही ऋषियों ने सम्यक तप कहा है।

तपस्या का सबसे बड़ा लाभ शांति है। शांति बाहर नहीं मिलती वरन् वह अंदर की वस्तु है जिसे अनुभव किया जाता है। तप के लिए शरीर का भी सहयोग बहुत जरूरी है। प्रश्न उठता है कि जब आत्मा का संबंध भूख से नहीं है फिर शरीर को भूखा रखकर कष्ट क्यों दिया जाए? हमें यहां तप की नई व्याख्या समझनी पड़ेगी। तप का मतलब तपना-तपाना है। शरीर को नहीं, आत्मा को तपाना है। आत्मा कैसे तपती है? जिस तरह हमें यदि दूध को दही बनाना है तो उसे किसी पतीले (बर्तन) में रखकर अग्नि में गर्म करना पड़ेगा। दही को यदि घी बनाना है तो फिर उस पतीले की जरूरत पड़ेगी। घी से मक्खन बनाना है तो बिना पतीले के वह भी संभव नहीं है। इसी तरह आत्मा को तपाने के लिए इस शरीर रूपी पतीले की जरूरत है। जैसे घी से मक्खन बनने के बाद उस पतीले का कोई महत्व नहीं रह पाता, वह अपने आप फिर ठण्डा हो जाता है, उसी तरह आत्मा की शुद्धि के लिए शरीर को तपाना जरूरी होता है। जब व्यक्ति का लक्ष्य मक्खन और साधक का लक्ष्य आत्मा से होता है फिर वे पतीले व शरीर की परवाह नहीं करते। शरीर का गुलाम कभी अपना लक्ष्य हांसिल नहीं कर सकता। जो शरीरी को गुलाम बनाकर उसे आत्मा की शुद्धी में उपयोगी बनाता है, फिर एक दिन वह शरीर भी नाम कमा लेता है।

अपने पुरातन कर्मो के अनुरूप हमारे अशुभ कर्म जो आत्मा से चिपके हुए है, उन्हें हटाने में तप का बहुत अधिक महत्व है। सभी धर्म-सम्प्रदायों में तपस्या का इसीलिए महत्व बताया गया है। जब साधक का लक्ष्य आत्मा की शुद्ध का होता है, फिर उसे शरीर का कष्ट अनुभव नहीं होता। 12 प्रकार के तप महापुरुषों ने प्रतिपादित किए है। अपनी आत्मा के द्वारा जो गंदगी हमने इकट्ठी कर ली है, उसे हमें ही दूर करनी पड़ेगी। ध्यान रखना-आत्मा को गंदगी से स्वच्छ बनाने के लिए ही तपस्या की जाती है। जब

जो पुरुष विद्वान्, ज्ञानी, धार्मिक, सत्पुरुषों का संगी, योगी, पुरुषार्थी, जितेन्द्रिय, सुशील होता है वहीं धर्मार्थ, काम, मोक्ष को प्राप्त होकर इस जन्म और परजन्म में सदा आनन्द में रहता है। स.प्र. द्वादश समु.

इच्छाओं का निरोध (निषेध) करके तपस्या की जाती है, तब वह सच्च तपस्वी कहलाता है। सम्यक ज्ञानी ही फिर आत्मा से मोक्ष प्राप्त करने की राह प्राप्त कर लेता है। आत्मा को शुद्ध, निर्मल, पवित्र, पावन यदि बनाना है तो सम्यक तप के द्वारा आगे बढ़े, एक दिन मंजिल जरुर मिलेगी। केवल व्रत-उपवास करने वाला ही तपस्वी नहीं होता वरन् जो व्यक्ति मांस, शराब, अंडे, शिकार, वैश्यावृत्ति, चोरी, जुआं आदि बुराईयों का त्यागी है, वह भी तपस्वी है। अपने जीवन में झांकना कि कहीं ये दुर्व्यसन मेरे जीवन में तो नहीं है? अगर है तो इन्हें छोड़ना भी तपस्या है।

ओम प्रकाश गुप्ता संपादक दैनिक राजस्थान टाईम्स

वेद और राष्ट्रीय एकता

डॉ. भवानीलाल भारतीय

वेदों में अध्यात्म विद्याएँ तो अपने मूल रूप में मिलती हैं, मनुष्य के इहलौकिक और भौतिक विकास के अनेक उपयोगी सूत्र भी उपलब्ध होते हैं। मानव की वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक उन्नति के नानाविध उपदेश वेदों में यत्र-तत्र सर्वत्र दृष्टिगोचर होते हैं। वेदों में राष्ट्र की कल्पना, राष्ट्र रक्षा के प्रयत्न राष्ट्रोन्नति के उपाय, राष्ट्रीय एकता के संवर्धन आदि से सम्बन्धित प्रश्नों की विस्तार से चर्चा है तथा राष्ट्र के सभी घटकों में पारस्परिक सौमनस्य स्थापित करने के बहुविध उपाय सुझाये गये हैं।

अथर्ववेद के 12वें काण्ड का प्रथम सूक्त ही वेद का राष्ट्रीय गीत है जिसमें मातृभूमि की अर्चना का माहात्म्य वर्णित है। जिस राष्ट्रीय एकता की हम प्रायः बात करते हैं वह उतनी सुगम नहीं है जितनी दिखाई पड़ती है। वस्तुतः राट्रोन्नति के जिन सूत्रों को अथर्ववेद के इस पृथ्वी सूक्त में वर्णित किया गया है, उनको राष्ट्र के नागरिकों के द्वारा धारण किया जा सकता है, क्योंकि सत्य, ऋत, उग्रता, दीक्षा, तप, ब्रह्म और यज्ञ ही राष्ट्र के वे आधारभूत तत्त्व हैं जिनको सुनिश्चित कर हम अपनी राष्ट्रीयता को सुरक्षित कर सकते हैं। राष्ट्रीय एकता को न तो केवल पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से ही बताया जा सकता है और न सभाओं और समितियों में बौद्धिक चर्चा से। इसके लिए आवश्यक है कि हम राष्ट्र के भौतिक स्वरूप और उसके भौगोलिक विस्तार का निरन्तर चिन्तन करते रहें। इसी अभिप्राय को व्यक्त करते हुए आलोच्य सूक्त में कहा गया है-

यस्यां समुद्रउत सिंधरापो यस्यामन्नं कृष्टयः सम्बभूवुः।। (१२/१/३)

अर्थात् विभिन्न समुद्रों और नदियों के जलस्त्रोतों को धारण करने वाली तथा नाना अन्नों को उपजाने वाली यह भूमि ही अपने निवासियों को भोज्य पदार्थ प्रदान करती रही है। अतः इस मातृभूमि के निवासियों को भी उसके सतत हित चिन्तन में रत रहना चाहिए। 'माता भूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्याः' इस सूत्र को वेद ने निर्विवाद रूप में प्रस्तुत कर आगे यह स्पष्ट कर दिया है कि चारों दिशाओं तक जिसका विस्तार है, जो धरती खेती के द्वारा हमें अन्न प्रदान करती है तथा जिस पर रहकर सभी प्राणी सचेष्ट होते हैं उसके प्रति हम अपने कर्त्तव्यों को जानें तथा तदनुकूल आचरण करें। राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाने के लिए राष्ट्र के गौरवमय अतीत से नागरिकों को अवगत कराना आवश्यक है। अपने गरिमामय अतीत को स्मृति पथ से ओझल कर यदि हम राष्ट्रीय एकता की बात करते हैं तो वह एक दुःस्वप्न मात्र ही होगा। इसी अभिप्राय को व्यक्त करने वाला निम्न मंत्र दृष्टव्य है-

यस्यां पूर्वे पूर्वजना विचकिरे यस्यां देवा असुरानभ्यवर्तयन्।। (१२/१/५)

अर्थात् जिस मातृभूमि की गोद में हमारे यशस्वी पूर्वजों ने नाना प्रकार के गौरवशाली कार्य किये और जहाँ सत्य, धर्म और न्याय की रक्षा में तत्पर देवताओं ने असत्य, अन्याय और अधर्म के पक्षपोषक असुरों को निरन्तर पराजित किया, वही धरती और उसका पुण्य स्मरण उसके निवासियों में ऐश्वर्य और तेज को धारण कराता है।

विश्वंभरा धरती- अथर्ववेद के इस सूक्त में भूमि माता के लिए जिन विशेषणों का प्रयोग हुआ है वे भी इस तथ्य के द्योतक हैं कि धरती को केवल भौतिक द्रव्यों का समूह मात्र मान लेना ही पर्याप्त नहीं है। यह 'विश्वंभरा और वसुधानी' है। सबका आधार होने से उसे 'प्रतिष्ठा' कहा गया है, स्वर्ण आदि रमणीय पदार्थों को अपने भीतर रखने के कारण यह 'हिरण्यवक्षा' है और चराचर पदार्थों को अपने ऊपर बसाने वाली होने के कारण यह 'जगतो निवेशिनी' है। राष्ट्रवासियों के भीतर जो उत्साह रूपी ऊष्मा है उसका आधार होने के कारण इसी धरती को 'वैश्वानरं बिभ्रती' भी कहा गया है। राष्ट्र की सुरक्षा और राष्ट्र की एकता एक-दूसरे पर अनिवार्यतः निर्भर है। यदि राष्ट्र की सुरक्षा में किसी प्रकार की ढील दी जाती है तो उसका परिणाम राष्ट्रीय एकता को नष्ट करने वाले तत्त्वों को प्रोत्साहन देना ही होगा। वे राष्ट्र और देशवासियों में परस्पर विसंवाद की स्थिति उत्पन्न करते हैं जो अन्ततः राष्ट्र के विनाश का कारण बनती है। अतः अथर्ववेदीय राष्ट्रसूक्त की यह सुविचारित धारणा है कि मातृभूमि की रक्षा में कभी प्रमाद नहीं करना चाहिए। इसके रक्षकों को हम 'देव' नाम से अभिहित करते हैं और वे ही सदा सजग होकर इस धरती माता की रक्षा में सन्नद्ध रहते हैं-

यां रक्षन्त्यस्वाप्ना विश्वदानीं देवा भूमि पृथिवीमप्रमादम्।। (१२/१/७)

अर्थात् राष्ट्र के इन जागरूक रक्षकों से रक्षित यह मातृभूमि ही हमें नाना प्रकार के मधुररसों और वर्चस् को प्रदान करने में समर्थ होती है।

राष्ट्रीय एकता की एक अनिवार्य शर्त है भूमि माता से हमारा निकट का परिचय। वस्तुतः राष्ट्र के नागरिकों को अपने राष्ट्र के नानाविध रूपों का चाक्षुष प्रत्यक्ष होना चाहिए। जिस विशाल नगपति को हमने भारत जननी का 'हिमकिरीट' कहा और जिसे हमने मातृभूमि का 'दिव्य भाल' कहकर गौरवान्वित किया, यदि उसके गगनचुम्बी हिमशिखरों को हमने प्रत्यक्ष नहीं देखा, यदि हम धरती के वक्षस्थल पर फैले सघन अरण्यों से परिचित नहीं हुए और मातृभूमि की उस मिट्टी की गोद में हमने क्रीड़ा नहीं की, जो बभ्र, कृष्णा, रोहिणी, विश्वरूपा है, तो राष्ट्र की एकता की बात हमारे लिए बाम्विलास होकर ही रह जायगी। जिस राष्ट्र को हम जानते ही नहीं, उसकी एकता कैसे सिद्ध करेंगे।

निजत्व बोध:- वस्तुतः राष्ट्र के साथ राष्ट्रवासी एक प्रकार के निजत्व का बोध करते हैं। इस अन्नदायिनी भूमि के साथ उनकी आत्मीयता स्थापित हो जाती है। तभी तो हम इस जड़ धरती को माता कहकर पुकारते हैं। स्थूल दृष्टि से देखें तो मातृभूमि क्या है? इसमें शिलाएँ हैं, पत्थर और धूल के कण ही तो हैं, पुनः यह धरती हमारे और सम्मान का पात्र कैसे बन जाती है? बात सीधी सी है। पत्थर की शिलाओं और धूल, मिट्टी का यह ढेर ही हमारी आराधना और उपासना का पात्र तब बनता है जब हमारे राष्ट्रनेता उसका सम्यक् रूप से धारण-पोषण कर उसमें राष्ट्र की आत्मा को स्थापित करते हैं। 'सा भूमिः संधृता धृता'- सम्यक्

जो परमेश्वर से वेद द्वारा दी गई आज्ञा के अनुकूल चलते हैं वे मोक्ष-सुख को प्राप्त होते हैं।

प्रकार से शासित धरती ही हमारे लिए पत्थरों और चट्टानों का ढेर न रहकर वंदनीय मातृभूमि बन जाती है। हमारे साथ उसका आत्मिक संबंध जुड़ जाता है। उसकी रक्षा करने के लिए हम अपनी जान की बाजी लगाने के लिए तैयार हो जाते हैं और स्वदेश गौरव को अस्मिता के साथ जोड़ लेते हैं। इसीलिए इस हिरण्यवक्षा पृथ्वी को हम बार-बार नमन करते हैं और माता के रूप में उसकी वन्दना करते हैं।

मातृभूमि के साथ आत्मीयता का सूत्र जुड़ जाने पर ही जहाँ उसके पत्थरों और चट्टानों, उसकी धूल और मिट्टी को हम स्नेहसिक्त दृष्टि से देखने लगते हैं वहाँ उसके वक्ष पर उगे वृक्षों, वनस्पतियों, और लताओं से भी बन्धुत्व भाव स्थापित करते हैं। हमारे प्राचीन साहित्य से ऐसे शतशः उदाहरण दिये जा सकते हैं जहाँ वृक्षों और लताओं को हमारे पूर्वजों ने अपने हमजोली सखा और बन्धु के रूप में देखा और संबोधित किया है। स्वदेश के प्रति निष्ठा का भाव कोई क्षणिक प्रवृत्ति नहीं है। इसे अस्थायी भाव के रूप में लेना उचित नहीं होगा। हम चाहे किसी स्थिति में रहें, स्वदेश की चिन्ता में ही हमें अपने प्रत्येक क्षण को व्यतीत करना है। इसी भाव का बोधक निम्न मंत्र है-

उदीराणा उतासीनाः तिष्ठन्तः प्रकामंतः।
पद्भ्यां दक्षिणसव्याभयांमा व्यथिष्महि भूम्याम्।। (१२/१/२८)

"हमारी मातृभूमि किसी भी स्थिति में हमसे न तो तिरस्कृत हो और न ही व्यथित हो"

वनस्पतियों की ही भाँति शुद्ध जल की पावनधारा प्रवाहित करने वाली यह धरती हमें स्वस्थ और पवित्र रखती है। राष्ट्र की सुरक्षा के लिए निरन्तर सावधानी अपेक्षित है। राष्ट्रवासियों की पारस्परिक एकता की परीक्षा भी उसी समय होती है। जब कोई आक्रमणकारी हमारे किसी दुर्बल छिद्र को देखकर अथवा हमें राष्ट्ररक्षा में असावधान पाकर किसी दिशा से हमारे देश पर आक्रमण करता है। हमारे देश का वर्तमानकालिक इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब पड़ौसी देशों ने हमारी मातृभूमि पर हमला किया है, तब-तब इस देश के निवासी अपनी सम्पूर्ण विविधताओं और अनेकताओं को भूलकर फौलाद की दीवार की भांति शत्रु के आक्रमण का प्रतिकार करने के लिए तैयार हुए हैं। पृथ्वी-सूक्त का निम्न मंत्र इसी अभिप्राय को प्रकट करता है-

मानः पश्चान्मा पुरस्तान्नुदिष्ठा मोत्तरादधरादुत।
स्वस्ति भूमे नो भवसा विदन्परिपन्थनो वरीयो यावयावधम्।। (१२/१/३२)

"पूर्व और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण किसी भी दिशा से हमें पीड़ा न हो। यह धरती हमारे लिए स्वस्तिदायिनी हो तथा मार्गावरोध शत्रु हमें पीड़ित न करें। उनके द्वारा की गई हिंसा का निवरण करने में हम सफल हों।"

रत्नगर्भा और नाना मूल्यवान धातुओं को अपने भीतर धारण करने वाली यह धरती हमारे राष्ट्र की समृद्धि का कारण है। धरती को खोदकर ही बहुमूल्य रत्न प्राप्त किये जाते हैं तथा कृषि कर्म के द्वारा वृक्ष-वनस्पतियाँ उगाई जाती हैं। इसी भाव का द्योतक निम्न मंत्र है-

यत्ते भूमे विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु। (१२/१/३५)

किन्तु हमारा खनन कार्य सीमा को पार न कर जाये, अन्यथा भूमि के गर्भ में स्थित सारे मूल्यवान पदार्थ एक बार ही समाप्त हो जाएँगे।

(शेष अगले अंक में)

उत्थान व पतन, कारण तथा समाधान

(व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के पतन के आधार बिन्दु)

लेखक- आचार्य आर्यनरेश वैदिक गवेणक

चरित्र-हीनता, कर्त्तव्यहीनता, मिलावटखोरी, कामचोरी, धनलोलुपता से लूट-खसोट, पर सम्पदा पर कब्जा, व्यभिचार, बलात्कार आदि से कम व अधिक प्रायः सारा समाज भ्रष्टाचार युक्त हो गया है। रिश्वत तो आज के भ्रष्ट समाज की अनिवार्यता तथा औपचारिकता बन गई है। बिना कर्तव्य निभाये अधिकतर लोग सुख-सुविधा प्राप्त करने की तीव्र इच्छा करते हैं। अन्यों के सुख-दुःख की चिन्ता किए बिना अपने लिए सुख प्राप्त करने की मन-मानी प्रवृत्ति ही सारे समाज की पीड़ा का मूल कारण है।

एक मौलिक प्रश्न विचारणीय है कि आखिर व्यक्ति आचार-भ्रष्ट होता क्यों है? आचार का वास्तविक अर्थ राष्ट्र समाज या परिवार के प्रति सब प्रकार का व्यवहार है न कि मात्र धन सम्बन्धी क्रिया कलाप। पहले लोग इतने भ्रष्टाचारी क्यों न थे? वे कौनसे कारण थे जो उन्हें भ्रष्टाचार करने से रोकते थे? पहले व्यक्ति भ्रष्टाचार से धन कमाना, दूसरों का अधिकार दबाकर व छीनकर धनवान बनना, दूसरों की पत्नियों, पतियों या पुत्रियों से विषय भोग करना, अपने सम्मान हेतु अन्यों के मान को मिट्टी में मिलाना अथवा अपने सुख हेतु दूसरों को दुःख देना और (ड्यूटी) कर्त्तव्य या प्रतिज्ञा को पूर्ण न करना। पाप समझता था। उसके मन में वैदिक सत्संग के कारण यह दृढ़ संस्कार होता था कि यदि मैंने ऐसा पाप किया तो भगवान द्वारा यहां इसी जन्म अथवा भावी जन्म में अवश्य फल भोगना पड़ेगा।

प्राचीन आर्यावर्तीय समाज के भ्रष्टाचार मुक्त होने का प्रथम व मूल कारण ईश्वर का दृढ़ विश्वास था। उस ईश्वर की वेदवाणी में दी गई बिना क्षमा की कर्मफल व्यवस्था थी। वह ईश्वर को सर्वत्र जानकर किसी भी प्रकार की आचार भ्रष्टता से बचता था। वह सत्कर्म-व्यवहार व आचार को पुण्य धर्म और दुर्व्यवहार या आचार को पाप समझता था। वह वेद ऋचाओं यथा-विश्वानि दुरितानि परासुव व धियो योन प्रचोदयात् से प्रेरणा पाकर मनुष्य जीवन से बुराइयों को दूर हटाना और बुद्धि को सदा सद्मार्ग पर चलाना अपना परमधर्म समझता था। वह यज्ञ करता हुआ सदा उसकी सुगंध के समान समाज के प्रत्येक प्राणी हेतु समरसता तथा आत्मीयता से व्यवहार करता था। वह अधिक धन, साधन व मान न मिलने पर यज्ञाग्नि के तुल्य तपता था, परन्तु दूसरों के दुःख का कारण नहीं बनता था। वह यज्ञ की ऊपर उठने वाली ज्वाला से प्रेरणा पाकर सुव्यवहार से प्रशस्त होता सदा पतित कहलाने से बचता था। अधर्म का धन, यौवन व मान अथवा पद उसके गो दुग्ध से पुष्ट तथा माता पिता से प्राप्त दृढ संस्कारों के कारण उसे विचलित न कर पाते थे। उसके सदाचार की दृढ़ दीवार का कारण उसे अपने आर्य वैदिक मात-पिता तथा आचार्य से मिले मानवता युक्त धर्म संस्कार थे। वह जीवन को प्रथम श्रेणी बंधन को तृतीय श्रेणी पर रखता था। वह जीवन का लक्ष्य भोग व लूट के स्थान पर मुक्ति योग होने से भ्रष्टाचार-पाप से बचता जीवन को राष्ट्र की

जो स्त्री–पुरुष परस्पर तुल्य गुण, कर्म और स्वभाववाले हों तो श्रेष्ठ माग्र, अत्यन्त कीर्ति और आनन्द को प्राप्त हों।

धरोहर समझता, समाज की सेवा व प्रभु की साधना को परमधर्म समझता था। आज के मानवीय पतन के कारण- जीवन को राष्ट्र की धरोहर न समझना, दृढ़ सदाचारी संस्कार न होना, तपस्या, कष्ट सहने का अभाव, वेदविरूद्ध मानवताहीन, चरित्रहीन, पाप करने पर क्षमा होने का अज्ञान और शरीर व संसार निर्माता सर्वव्यापक निराकार पापक्षमा न करने वाले सच्चे ईश्वर के स्थान पर क्षमा करने वाले नकली एक स्थान वाले। अल्लाह, गौड व देवता का अज्ञान। आज भ्रष्टाचार के यही मूल कारण हैं। आओं हम उत्थान व सदाचार की सिद्धि हेतु ओम् का सदा ध्यान, वेद का सत्यज्ञान, यज्ञ का अनुष्ठान, गोमक्त संस्कारी संतान व राष्ट्रहित बलिदान की भावना सींचकर भारत को पुनः विश्वगुरु बनाए।

आर्य समाज सज्जन नगर द्वारा ऋषि दयानंद बोधोत्सव मनाया गया

उदयपुर 10 मार्च रविवार। आर्य समाज सज्जननगर में प्रधान श्री हुकमचंद शास्त्री जी की अध्यक्षता में ऋषि बोधोत्सव मनाया गया। प्रारम्भ में ब्रह्मचारी सौरभदेव आर्य के पौरोहित्य में देवयज्ञ हुआ। यजमान श्री आचार्य सुनील कुमार मिश्र एवं श्रीमती रजनी मिश्रा थे।

भजनोंपदेशक श्री रवीन्द्र तिवारी ने बोधोत्सव सम्बन्धी, ''मन का दिया जला ले'' तथा ''बीहड़ वन में विचर रहा था सच्चे शिव का मतवाला छोड़ दिया था टंकारा'' इन भजनों से श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। तबले पर संगत आचार्य सुनील कुमार मिश्र ने की।

मुख्य अतिथि श्रीमती रूचिका शर्मा गुडगाँव (हरियाणा) ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि ऋषि बोधोत्सव से प्रेरणा लेकर स्वयं बोधित होकर ऋषि के सिद्धांतों को जीवन में उतारकर ऋषि मिशन को सफल बनाने में सहयोग प्रदान कर पुण्य के भागी बनें।

आचार्य प्रमोद शास्त्री ने पुराण व वेद विषयक शंका समाधान कर संगठन सूक्त व आर्यसमाज के दस नियमों का पाठ किया। प्रधान श्री हुकमचन्द शास्त्री जी ने ऋषि के सच्चे शिव की खोज, मृत्यु पर विजय तथा ''वेदों की ओर लौटो'' नारे की विस्तृत व्याख्या कर आर्यों को महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन से प्रेरणा लेकर ऋषि ऋण से मुक्त होने के लिए प्रेरित किया। अंत में शांतिपाठ व जयघोषों के साथ ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न हुआ।

-सौरभदेवी आर्य, मंत्री

कार्यालय आर्य समाज शाहपुरा द्वारा 138वाँ आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

आर्य समाज का 138वाँ स्थापना दिवस स्थानीय आर्य समाज मंदिर में मनाया गया। विशेष यज्ञ का आयोजन रखा गया, जिसमें नवसंवत्सर एवं आर्य समाज स्थापना के विशेष वैदिक मंत्रों की आहुतियां दी गई। यज्ञ के मुख्य यजमान सत्य नारायण तोलम्बिया, राम प्रसाद छीपा, गोपाल राजगुरु, रामधन काबरा थे। यज्ञ के पश्चात ध्वज फहराया गया। सभा आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता शिक्षाविद राजेन्द्र प्रसाद डांगी ने की। आर्य समाज की स्थापना के बारे में हीरालाल आर्य, सोहनलाल शारदा, सत्य नारायण तोलम्बिया, कन्हैयालाल आर्य ने विचार रखकर जानकारी पर प्रकाश डाला। दयानंद विद्यालय के छात्रों ने महर्षि दयानंद के जीवन पर गीत प्रस्तुत किये। कार्यक्रम में हनुमान प्रसाद पुरोहित, बाल मुकंद बगेरवाल, जयशंकर पाराशर, अखिल व्यास आदि उपस्थित थे। शांति पाठ एवं जयघोष के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

-सत्यनारायण तोलम्बिया, मंत्री

शारदा देवी छोटूसिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट, अलवर द्वारा स्वतंत्रता सेनानी स्व. श्री छोटूसिंह आर्य की स्मृति में सन्यासी वैदिक विद्वान एवं कर्मठ कार्यकर्ता को आर्य शिरोमणि उपाधि से सम्मान

स्वतंत्रता सेनानी स्व. श्री छोटूसिंह आर्य संस्थापक अध्यक्ष आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर की स्मृति में अलवर, भरतपुर, दौसा, सवाईमाधोपुर, धौलपुर, कोटपूतली जिलों में आर्य समाज के क्षेत्र में विशेष योगदान देने वाले महानुभाव (सन्यासी वैदिक विद्वान एवं कर्मठ कार्यकर्ता) को आर्य शिरोमणि उपाधि से सम्मानित किया जाता है।

इस वर्ष भी आर्य के 93वें जन्म दिवस पर 11 अगस्त 2013 को आर्य जगत के विद्वान श्री विद्यासागर शास्त्री, पूर्व अध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान को देने का निश्चय हुआ है।

तृतीय उपाधि समारोह आर्य समाज स्वामी दयानंद मार्ग, अलवर में 11 अगस्त 2013 को सायं 4.00 बजे यज्ञ के पश्चात होगा। आप सपरिवार सादर आमंत्रित है।

- अशोक आर्य, प्रधान-शारदा देवी छोटूसिंह आर्य चैरेटेबल ट्रस्ट

आर्य समाज पवनपुरी (पटेल नगर), बीकानेर

आर्य समाज पवनपुरी (पटेल नगर) बीकानेर का वार्षिक चुनाव दिनांक 24 मार्च 2013 को साधारण सभा द्वारा आर्य समाज भवन में श्री अशोक जी साहनी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें सर्व सम्मति से निम्नांकित पदाधिकारी निर्वाचित किए गये तथा श्री सुरेश चन्द्र जी भसीन व श्री मांगे राज जी पूनियां को इस समाज का संरक्षक चुना गया।

प्रधान- श्री राधा चरण शर्मा,
उप प्रधान- श्री श्यादान सिंह, श्रीमती इन्द्रा चावला
मंत्री- श्री गौतम सिंह, उपमंत्री- श्री राम नगीना सिंह
प्रचार मंत्री - श्रीमती उर्मिला मिश्र, श्री विन्ध्याचल मिश्र
कोषाध्यक्ष- श्री विवेक कुमार कुशवाहा
लेखा परीक्षक- श्री दयानन्द चावला
यज्ञ व्यवस्थापक - श्री रामआज्ञा सिंह
भवन देशरेख एवं मरम्मत प्रभारी- श्री जगन पूनिर्या
कार्यकारिणी सदस्य- श्री शारदा नन्द शुक्ल, श्री संदीप शर्मा, श्री भुवनेश शर्मा ।

-गौतम सिंह, मंत्री

जिस परमात्मा का यह ओ३म् नाम है उसकी कृपा और अपने धर्म-युक्त पुरुषार्थ से हमारे शरीर, मन औ आत्मा का त्रिविध दुःख जो कि अपने और दूसरे से होता है नष्ट हो जावें और हम लोग प्रीति से एक-दूसरे के साथ वर्त्त के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि में सफल हो के सदैव स्वयं आनन्द में रहकर सबको आनन्द में रक्खें।

-संस्कार विधि

मॉडल पब्लिक रेजिडेंशल स्कूल, ढ़ीकली द्वारा महर्षि दयानन्द जयन्ती उत्सव मनाया गया

उदयपुर 7 मार्च 2013 को विद्यालय में महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती उत्सव शिविरा पंचांग के अनुसार मनाया गया जिसकी मुख्य अतिथि डॉ1 मोदिका शर्मा जयपुर थी। अध्यक्षता प्रधानाध्यापक श्री मगनलाल जोशी जी ने की।

कार्यक्रम का प्रारम्भ ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना के साथ ब्रह्मचारी सौरभ मंत्री आर्य समाज सज्जन नगर उदयपुर व विद्यालय की छात्राओं द्वारा किया गया। छात्राओं में सुश्री वंदना, कृतिका, मनीषा, अमीषा एवं रिया की प्रस्तुतियाँ मनमोहक व आकर्षक रहीं। सुश्री कलावती, रेशमा, रोशनी एवं कमला ने ''युग युग तक अमर रहेगी ऋषिवर तेरी कहानी, हम भूल नहीं सकते हैं दी तूने जो कुर्बानी'' इस मधुर गीत के माध्यम से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया और वातावरण को स्मरणीय एवं सराहनीय बना दिया। वरिष्ठ अध्यापक श्री प्रेमकुमार जी मिश्रा ने महर्षि के कार्यो की प्रशंसा की।

मुख्य अतिथि डॉ. मोदिका शर्मा ने महर्षि के जीवन-चरित्र पर प्रकाश डालते हुए महर्षि के द्वारा महिलाओं पर किये गये उपकारों की व्याख्या की और उनकी शिक्षा एवं उपदेशों को आचरण में लाने के लिए प्रेरित किया। प्रधानाध्यापक श्री मदनलाल जोशी जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महर्षि के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कार्यक्रम की प्रशंसा की और विद्यालय में सदैव प्रेरणा हेतु महर्षि के चित्र लगाने की इच्छा व्यक्त की।

कार्यक्रम का संयोजन श्री हुकमचंद शास्त्री जी ने किया। श्री गोपाल कृष्ण पूर्बिया, पंकज जोशी, अमृत मीणा, ताराचंद बुलानिया, ओमप्रकाश सोलंकी, रामचन्द्र मेनारिया, तारासिंह बड़गुर्जर का सहयोग प्रशंसनीय रहा। अंत में शांति पाठ और जयघोषों के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

- तारासिंह बड़गुर्जर, पुस्तकालयाध्यक्ष

आर्य समाज बारां (राज.)

बारां 31 मार्च। ऋषि बोध पर्व के अवसर पर चल रहे तीन दिवसीय यज्ञ, भजन एवं उपदेश कार्यक्रम के अन्तर्गत स्थानीय आर्य समाज मंदिर में सैंकड़ों धर्म प्रेमियों ने भाग लिया। इस दौरान दिल्ली से आमंत्रित उपदेशक आचार्य वेद प्रकाश क्षोत्रिय ने ईश्वर द्वारा प्राप्त दया एवं कृपा में अंतर स्पष्ट करते हुए कहा कि मनुष्य की उत्पत्ति से पूर्व सूर्य, चन्द्र, वनस्पति, जल एवं अन्य योग्य वस्तुयें जो ईश्वर ने प्रारब्ध से ही मनुष्य के निमित्त पैदा कर दी। यह ईश्वर की हमारे ऊपर दया है तथा जिस प्रकार लोहा अग्नि के सानिध्य में रहकर अपने अस्तित्व को समाप्त करके अग्निमय हो जाता है उसी प्रकार मनुष्य जब ईश्वर में एकाकार हो जाता है अथवा ईश्वर उसे अलौकिक रूप देकर दिव्य तेजोमय कर देता है उसे ईश्वर की कृपा कहते हैं साथ ही उन्होंने मृत्यु और मोक्ष के अंतर को समझाया।

बिजनौर (उ.प्र.) से पधारे भजनोपदेशक कुलदीप आर्य ने भी अपने सारगर्भित भजनों की रसगंगा बहाकर सबके हृदय को आप्लावित कर दिया। ''तेरे नाम का सुमिरन करके मेरे मन मं सुख भर आया'' आदि भजनों के माध्यम से उन्होंने ईश्वरीय शक्ति को उल्लेखित करने के साथ-साथ उसके तेजोमयस्वरूप को भी परिलक्षित करने की भूमिका निभाई। बोध पर्व की सार्थकता को सिद्ध करता हुआ उनका यह भजन ''सच्चे शिवजी की खातिर जिसने छोड़ा टंकारा, टक्कर ली तूफानों से.....'' उपस्थित जन समुदाय में काफी चर्चित रहा।

समापन सत्र के अंत में आर्य समाज बारां के प्रधान श्री योगेश्वर स्वरूप भटनागर तथा मंत्री श्रीमती गायत्री नागर ने आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय नई-दिल्ली, आचार्य वेद प्रिय शास्त्री केलवाड़ा एवं भजनोपदेशक कुलदीप आर्य बिजनौर, श्री अर्जुन देव चढ्डा कोटा तथा विभिन्न आर्य समाज से पधारे एवं बारां शहर के सभी भद्र पुरुषों एवं मातृशक्ति को कार्यक्रम की सफलता के लिए सधन्यवाद आभार व्यक्त किया।

- गायत्री नागर, मंत्री

विश्वशान्ति एवं मानव कल्याणार्थ यजुर्वेद पारायण यज्ञ

जयपुर। वैदिक विधि विधान एवं कर्मकाण्ड के प्रति आकर्षण व श्रद्धा अब पौराणिक जगत एवं सामाजिक संगठनों को भी आकृष्ट करने लगे हैं। इसका ताजा उदाहरण मानसरोवर कॉलोनी के 'डे केयर सेंटर' में वरिष्ठजनों की संस्था सीनियर सिटिजन फोरम द्वारा आहूत यजुर्वेद पारायण यज्ञ है। आर्य समाज जयपुर दक्षिण के संयोजन में दिनां क 7 मार्च से 10 मार्च 2013 तक विश्व कल्याणार्थ यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ 7 मार्च 2013 को ऋषि दयानन्द के 189 वें जन्मोत्सव के साथ प्रारंभ हुआ और पूर्णाहुति ऋषि बोध दिवस 10 मार्च 2013 को सम्पन्न हुई। प्रख्यात वेद मनीषी डॉ. रामपाल विद्याभास्कर इस यज्ञ के ब्रह्मा बने और डॉ. सुमित्रा (वाराणसेय स्नातिका) ने वेदपाठ किया। कार्यक्रम के संयोजक सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (राज.) के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल यश ने ऋषि के त्यागमय जीवन प्रकाश डाला। स्वर माधुर्य से चारों दिन सर्वश्री यादराम, जवाहर लाल वधवा, मेहरा परिवार, श्रीमती सुधा मित्तल तथा सुनील अरोड़ा ने भजन प्रस्तुत किए। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद (राज.) के स्थाई कार्यक्रम 'जातिवाद के विरूद्ध जंग' के अंतर्गत 10 मार्च 2013 को पूर्णाहुति पश्चात अन्तर्जातीय विवाहित आठ जोड़ों का प्रशस्ति-पत्र, प्रतीक चिन्ह और माल्यार्पण द्वारा सम्मान किया गया। नगर के वैदिक विद्वान डॉ. के पी.सिंह एवं विशिष्ट जनों का सम्मान सीनियर सिटिजन फोरम् के अध्यक्ष के.एम. रामनानी एवं आर्य समाज जयपुर दक्षिण के प्रधान डी.के. गुप्ता द्वारा किया गया। आयोजन में स्थानीय लोगों की रुचि व बहुलता बनी रही। नगर के सभी आर्य समाजों का प्रतिनिधित्व रहा। शांतिपाठ के पश्चात ऋषि लंगर के साथ समागम विसर्जित हुआ। -यशपाल यश

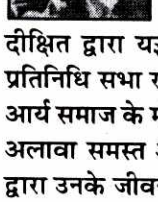

स्व. श्रीमती राधादेवी आर्या की द्वितीय पुण्यतिथि पर यज्ञ एवं प्रवचन

दिनांक 17 अप्रैल 2013 को श्रीधर्मसिंह जी आर्य कोषाध्यक्ष जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, अलवर की पत्नी स्व. राधादेवी आर्य (राजगढ़) की स्मृति में प्रात: 8 बजे से 9.30 बजे तक श्री आर्य शिरोमणी विनोदीलाल दीक्षित द्वारा यज्ञ कराया गया। उसके पश्चात श्री अमरमुनि मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का उपदेश हुआ। श्री महाराज सिंह जी बांदीकुई आर्य समाज के मंत्री द्वारा श्रद्धाजंलि दी गई। इस अवसर पर परिवारजनों के अलावा समस्त आर्य समाज के सदस्य उपस्थित थे। श्री विनोदीलाल जी द्वारा उनके जीवन पर प्रकाश डाला वह इस प्रकार है-

श्रीमती राधादेवी का जन्म 25 मई सन् 1942 को बलदेव भवन केडलगंज अलवर में हुआ था। आपके पिताजी का नाम श्री रामचन्द्र सिंह और माताजी का नाम श्रीमती प्रेम देवी था। तीन भाई और आठ बहनों में आप पाँचवे स्थान पर थीं। आपका विवाह 16 जनवरी 1955 को बाबू मोहन लाल जी आर्य के तृतीय सुपुत्र श्री धर्मसिंह जी के साथ सम्पन्न हुआ। आपका गृहस्था जीवन बड़ा सात्विक रहा। आपके जीवन के कुछ सिद्धांत थे- अच्छाई के लिए संघर्षशील बनो, अनुचित बात का प्रतिकार करो, वह कैसा आर्य समाजी है जो यज्ञ नहीं करता आदि। उनका प्रिय भजन था- सुबह शाम भजन करले, मुक्ति का यतन करलें। दिनांक 17 अप्रैल 2011 को वैदिक धर्म के प्रचार का उत्तरदायित्व अपने चार पुत्रों, पुत्र-बधुओं चार पौत्रों, चार पौत्रियों, दो पुत्रियों-दामादों, तीन दोहित्रों और दो दोहित्रियों को सौंपकर सदा के लिए अनन्त ज्योति में विलीन हो गई। रह गए प्रेरक संस्मरण।

जिन मनुष्यों की सोमलता ओषधि के सदृश पवित्र करनेवाली बुद्धि, अतुल बल और अग्निविद्या होती है वे ही आनन्दित होते हैं।

विश्व शान्ति व जनकल्याण भावना चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ का आयोजन सम्पन्न

विश्व शांति व जनकल्याण भावना से दिनांक 13 व 14 अप्रैल 2013 को ईशानुकम्पा से चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ का आयोजन समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. रामपाल विद्या भास्कर व वेद पाठ श्रीमती श्रुति शास्त्री द्वारा किया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी का आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ। पूर्णाहुति के पश्चात् ऋषि लंगर का आयोजन भी किया गया।

आर्य समाज सज्जन नगर, उदयपुर के वार्षिक चुनाव सम्पन्न

उदयपुर 7 अप्रैल, रविवार को आर्य समाज सज्जन नगर की कार्यकारिणी एवं पदाधिकारियों के वार्षिक चुनाव यज्ञ सत्संग के पश्चात निर्वाचन अधिकारी भारतीय सेना के सहायक लेखा अधिकारी श्री विक्रमसिंह जी ने निम्नलिखित प्रकार से सम्पन्न करायें।

प्रधान- श्री हुकम चंद शास्त्री, उप प्रधान- श्री भुवनेश जोशी
मंत्री- श्री सौरभ देव आर्य, उपमंत्री- श्री हेमांग जोशी
प्रचारी मंत्री- श्री रवीन्द्र तिवारी, कोषाध्यक्ष- श्री अशोक उदावत
पुस्तकालयाध्यक्ष- आचार्य श्री प्रमोद शास्त्री
अंतरंग सदस्य- श्री श्याम बाबू दीक्षित, डॉ. संजय माहेश्वरी, श्री हंसराज शास्त्री, श्री दशरथ आर्य, श्री सुनील कुमार मिश्र, श्रीमती रजनी दीक्षित, श्रीमती सुमन तिवारी, श्रीमती गीता देवी शर्मा
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर हेतु प्रतिनिध- श्री हुकम चंद शास्त्री, आचार्य श्री प्रमोद शास्त्री
अंकेक्षक- श्रीमती पूनम भाटिया, श्री मदन गोपाल शर्मा
पुरोहित- श्री सौरभ देव आर्य

अंत में शांति पाठ व जय घोषो के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात सामुहिक भोज का आयोजन किया गया। - सौरभदेव आर्य, मंत्री

आर्य समाज मरजीवी (निम्बाहेड़ा)

चितौड़गढ़ जिले के निम्बाहेड़ा तहसील के मरजीवी ग्राम में सर्वसम्मति से आर्य समाज-मरजीवी का गठन किया गया। गठन के समय आर्य समाज निम्बाहेड़ा के विक्रम सिंह आंजना, राधेश्याम धाकड़ व पतंजलि योग समिति निम्बाहेड़ा के जानकी लाल जोशी व मोड़ीराम प्रजापति आदि उपस्थित थे।

संरक्षक- गणपत लाल पटेल, प्रधान- कारूलाल गायरी,
उपप्रधान- जीवन आंजना, मंत्री- विक्रम आंजना, उपमंत्री- दशरथ आंजना
कोषाध्यक्ष- गणपतलाल आर्य
सदस्य- कमल आर्य, कारूलाल आंजना, भंवरलाल शर्मा, नाथुलाल सेन, गोपाल आंजना, विक्रम आंजना, गणपत धोबी, मानसिंह आंजना, सुनिल आंजना , श्यामलाल नायक, अमृत आंजना - मंत्री विक्रम आंजना

आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात, फिरोजपुर झिरका

हरियाणा के मेवात क्षेत्र में पुलिस चौकी को फूंकना-पुलिस की पिटाई करके बेइज्जत करना, गो हत्या का अत्यन्त बढ़ जाना, धर्म परिवर्तन व लव जिहाद के नाम पर हिन्दू लडकियों से शादी विवाह रचाना आदि अनेक घटनाऐं चिन्ता का विषय बनती जा रही है।

अभी हाल में घटी घटना का संक्षिप्त विवरण-

रविवार देर रात ट्रक रुकवाना इंदाना चौकी पुलिस को महंगा पड़ गया। भागते समय ट्रक चालक को लगी चोट इलाके में अफवाह बनकर मौत की खबर के रूप में पहुंची तो लोगों का धैर्य जबाव दे गया। गुस्साई भीड़ ने इंदाना चौकी को आग के हवाले कर दिया। हद तो तब हो गई जब सरकारी पीसीआर गाड़ी सहित पांच गाड़ियों तथा पांच बाईकों को आग के हवाले कर दिया। रही सही कसर आग बुझाने आ रहीं फायर बिग्रेड की गाड़ी को रास्ते में रोककर ना केवल कर्मचारियों की पिटाई की तथा गाड़ी के शीशे तोड़कर पूरी कर दी। पुन्हाना पुलिस को भी घटना स्थल तक पहुँचने में भीड़ के गुस्से का सामना करना पड़ा। तब तक आग अपना काम तमाम कर चुकी थी तो कर्मचारी भीड़ के डर से जान बचाकर अंधेरे का फायदा उठाकर खेतों में छुप गए। दो राईफल के साथ-साथ पचास कारतूस के अलावा टीवी, इन्वर्टर, सिलेण्डर इत्यादि कीमती सामान लूटकर ले गए। आग ने सभी सरकारी दस्तावेजों के साथ-साथ इंदाना पुलिस चौकी में रखे सामान को राख में तब्दील कर दिया।

आपको बता दें कि रविवार देर रात करीब साढ़े नौ बजे ट्रक इंदाना चौकी पहुंचा तो पुलिस कर्मियों ने ट्रक को रूकवाना चाहा। ट्रक चालक ने ट्रक रोकने की बजाय दौड़ा दिया, पुलिस ट्रक का पीछा करने लगी तो नीमका गांव के समीप अपने आपको घिरता देख चालक व परिचालक भागने लगे। इसी दौरान गिरने से सलमान निवासी लफूरी को चोट लग गई। इस दौरान चालक-परिचालक ने मारने- पीटने का शोर मचाया तो नीमका गांव के लोग वहां पहुंच गए। धीरे-धीरे यह खबर इलाके में चालक की पिटाई से मौत की अफवाह के रूप में तेजी से फैलने लगी। धीरे-धीरे भीड़ बढ़ती गई और गुस्से का पारा फूट पड़ा। गुस्साई भीड़ ने इंदाना चौकी पर धावा बोल दिया, जहां जो कुछ दिखाई पड़ा या तो उसे आग के हवाले कर दिया या फिर उसे लूटकर ले गए। बेबस पुलिसकर्मी जानबचाकर इधर-उधर गायब हो गए।

सोमवार सुबह जब हमारी टीम पुलिस चौकी में पहुंची तो फायर बिग्रेड आग बुझाने में जुटी थी तथा पुलिस चौकी छावनी में तब्दीन हो चुकी थी। मेवात में जवानों की संख्या कम होने के कारण पड़ोसी जिला पलवल से भारी संख्या में पुलिस बल मंगाना पड़ा। तभी जाकर मामला शांत हो पाया। पुन्हाना पुलिस ने इंदाना चौकी प्रभारी एएसआई महेन्द्र सिंह के बयान पर अज्ञात 300-400 लोगों के खिलाफ भा.द.स. की धारा 148,149,307,435,495, 397, 332, 353 इत्यादि के तहत मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस के मुताबिक गुस्साई भीड़ ने फायरिंग भी की। भीड़ को तितर-बितर करने के लिए पुलिस जवानों को भी फायरिंग करनी पड़ी। -पदम चंद आर्य, गुडगांवा (हरि.)

आप्त लोग वे होते हैं जो धर्मात्मा, कपट-छलादि दोषों से रहित, सब विद्याओं से युक्त, महायोगी और सब मनुष्यों के सुख होने के लिए सत्य का उपदेश करने वाले हैं जिनमें लेशमात्र भी पक्षपात या मिथ्याचार नहीं होता।

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, अलवर का निर्वाचन सम्पन्न

दिनांक 11 अप्रैल 2013 को दोप. 2 बजे से 4 बजे तक जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, अलवर की साधारण सभा की बैठक आर्य समाज बाजाजा बाजार में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता जिला प्रधान जगदीश प्रसाद आर्य-जखराना ने की। सर्व प्रथम जिला मंत्री हरिपाल सिंह शास्त्री ने कार्यकारिणी की गत कार्यवाही को पढ़कर सुनाया, जिसकी सर्वसम्मति से पुष्टि की गई। तत्पश्चात जिला कोषाध्यक्ष धर्मसिंह ने आय-व्य का ब्यौरा प्रस्तुत किया, जिसे सभी ने पारित किया।

उसके बाद आर्य समाज के प्रदेश मंत्री अमरमुनि को निर्वाचन अधिकारी बनाया गया। विचार विमर्श के बाद आम राय से आर्य समाज जिला अलवर अर्थात् जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, अलवर की कार्यकारिणी घोषित की गई। घोषित कार्यकारिणी इस प्रकार है:-

संरक्षक- अमर मुनि, जिला प्रधान- जगदीश प्रसाद आर्य (जखराणा)
उप प्रधान- अशोक कुमार आर्य (अलवर), रामौतार सोनी (तिजारा)
जिला मंत्री-हरिपाल सिंह शास्त्री (किशनगढ़बास),
संयुक्त मंत्री- धर्मवीर आर्य (अलवर),
कार्यालय मंत्री- बृजेन्द्र देव आर्य, उप मंत्री- शिव कुमार कौशिक
कोषाध्यक्ष- धर्मसिंह आर्य (राजगढ़),
वेद प्रचार अधिष्ठाता- विनोदीलाल दीक्षित
सदस्य गणों में- कै. रघुनाथ सिंह, वेद प्रकाश आर्य (रामगढ़), महाशय हरीसिंह (गाधोज), सत्येन्द्र आर्य (हरसौली), राधेश्याम आर्य (गोविन्दगढ़), किशोरीलाल आर्य (खैरथल), रमेश चुघ, डॉ. बी.डी. चौधरी, सुनील आर्य, माता मोहनदेवी, प्रेमलता आर्य तथा ईश्वरी देवी शर्मा ।

परामर्शदाता के रूप में प्रदीप आर्य (अलवर) को चुना गया। जिला अध्यक्ष एवं निर्वाचन अधिकारी के धन्यवाद के बाद शांतिपाठ के साथ सभा समाप्त हुई। - धर्मवीर आर्य, संयुक्त मंत्री

आर्य वीरांगना दल राजस्थान प्रदेश द्वारा व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर

दिनांक 11 मई से 19 मई 2013 तक

स्थान : बैदिक बालिका उ.मा. वि., आदर्श नगर, जयपुर

मैं राष्ट्र की ध्वजा, विद्युषी और समय पड़ने पर मैं दुर्गा के समान उग्र भी बन सकती हूँ।

वैदिक नारी की इस गर्जना को फलीभूत करने के लिये इस वर्ष बालिकाओं में शारीरिक, आत्मिक, नैतिक बल एवं वैदिक सिद्धांतों का प्रशिक्षण देकर उन्हें राष्ट्र, समाज व परिवार के निर्माण में एक अहम् भूमिका निभाने हेतु आर्य वीरांगना प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। इस शिविर के माध्यम से बालिकाओं को शारीरिक, बौद्धिक विकास, राष्ट्रीय चेतना, अनुशासित जीवन, आत्मरक्षण, शस्त्र प्रशिक्षण, संगीत एवं वैदिक संस्कृति के प्रति निष्ठा उत्पन्न करना ही इस शिविर का मुख्य उद्देश्य है। सभी आर्यजनों से निवेदन है कि इस शिविर हेतु अपनी श्रद्धा एवं सामर्थ्य के अनुसार आर्थिक सहयोग प्रदान कर पुण्य का लाभ उठाये।

सत्यार्थ दूत सरोज आर्या (वर्मा) मो.9493496529

आर्य समाज मन्दिर, बाजाजा बाजार, अलवर

दिनांक 11 अप्रैल 2013 को प्रात: 7.30 से 12 बजे तक अलवर की तीनों आर्य समाजों ने संयुक्त रूप से नव सम्वतसर पर्व एवं आर्य समाज स्थापना दिवस अति हर्षोल्लास के साथ आर्य समाज बजाजा बाजार, अलवर में मनाया। समारोह की अध्यक्षता एडवोकेट जगदीश प्रसाद गुप्ता प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति ने की एवं मुख्य अतिथि पं. अमर मुनि व विशिष्ठ अतिथि प्रदीप आर्य-चेयरमेन यू.आई.टी थे।

समारोह का प्रारम्भ पं. विनोदीलाल दीक्षित, पं. अमर मुनि, पं. शिवकुमार कौशिक, रघुवीर आर्य तथा धर्मेन्द्र शास्त्री के आचार्यत्व में यज्ञ/ हवन से हुआ। उसके बाद माता मोहनदेवी आर्य शिरामेणी एवं धर्मपाल आर्य-संरक्षक ने ध्वजारोहण किया। प्रधान रमेश चुघ, मंत्री बी.डी. चौधरी, ओम प्रकाश तनेजा तथा धर्मवीर आर्य आदि पदाधिकारियों ने मंचासीन सभाध्यक्ष जगदीश प्रसाद गुप्ता एडवोकेट, विशिष्ठ अतिथि प्रदीप आर्य, अमरमुनि महामंत्री प्रांतीय आर्य समाज, जिलाध्यक्ष जगदीश प्रसाद आर्य, जिला मंत्री हरिपाल सिंह शास्त्री, जिला कोषाध्यक्ष धर्मसिंह आर्य, विनोदीलाल दीक्षित का माल्यार्पण कर स्वागत किया। आर्य बालिका उ.मा.वि. की छात्राओं ने ईश्वर भक्ति गीत 'तू है सच्चा पिता' एवं महर्षि दयानन्द गीत 'देखो दयानन्द क्या कर गया' सुनाया। बहिन सत्या एवं तनेजा ने 'बड़ी प्यार सुहानी है आर्य समाज' तथा राधेश्याम आर्य-गोविन्दगढ ने 'पढ़ने को वेद विद्या तैयार कैसे होते?' गीत सुनाया।

कार्यक्रम में कई वक्ताओं ने ओजस्वी प्रवचन दिये। धर्मसिंह आर्य-राजगढ़ ने बताया कि सृष्टि का प्रारम्भ इसी दिन से हुआ एवं महर्षि दयानन्द ने इसी दिन बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। विनोदीलाल दीक्षित ने बताया कि सृष्टि का कर्म गतिशील है एवं महर्षि दयानन्द में यजुर्वेद के 31 वें सूत्र का वेदमानव करके सृष्टि की विस्तृत व्याख्या की। जगदीश प्रसाद आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द के अनुसार कर्म फल भोगने के लिऐ सृष्टि की रचना की एवं ईश्वर ने प्रारम्भ में अमैथुनीय शक्ति से सृष्टि की रचना में युवा जीवों को उत्पन्न किया। धर्मेन्द्र शास्त्री ने कहा कि अभी प्रलय होने में लगभ दो अरब का समय शेष है। कुल 8 अरब के दिन-रात सृष्टि में होते हैं। हरिपाल सिंह शास्त्री ने प्रवचन में कहा कि महाराज विक्रमादित्य ने दुख विहीन एवं ऋण विहीन प्रजा बनाकर सम्वत् प्रारम्भ किया। प्रदीप आर्य - चेयर मेन यू.आई.टी ने नव सम्वतसर के आगमन पर सभी के कल्याण की कामना की। अमर मुनि प्रदेश महामंत्री ने कहा कि प्रलय के बाद ईश्वर ने चैत सुदी एकम् के दिन सृष्टि की रचना की। सभाध्यक्ष जगदीश प्रसाद गुप्ता ने बताया कि प्रत्येक समाज सम्पूर्ण भारत में खगोल विज्ञान की दृष्टि से इस दिन को महत्वपूर्ण मानता है। अंत में माता मोहनदेवी ने नवसम्वत्सर पर सभी की मंगलकामना की एवं मंत्री डॉ. बी.डी. चौधरी ने सफल आयोजन के लिये आभार बताया। संचालन बृजेन्द्र देव आर्य ने किया। जिले की विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों के अलावा बड़ी संख्या में आर्य जन समारोह में उपस्थित हुए जिनमें रमेश चुग, बी.डी. चौधरी, अशोक कुमार आर्य, कमला शर्मा, धर्मवीर आर्य, सुनील आर्य, राधेश्याम आर्य, रामसिंह आर्य, कृष्णकुमार भाटिया, गेंदालाल सैनी, शिवाजी नेहरा, वेद प्रकाश शर्मा, सुरेश चंद दर्गज, रमेश दर्गन, रोशनलाल चक्रवर्ति, ओम प्रकाश तनेजा, प्रेम आर्य, आचार्य निरंजनदेव, रामौतार सैनी आदि प्रमुख थे। कार्यक्रम के बाद ऋषि लंगर का आयोजन हुआ। -डॉ. बी.डी. चौधरी

जो मनुष्य जैसे अपने लिए सुख की इच्छा करे वैसे ही दूसरों के लिए भी करे वही आप्त सत्कार करने के योगय होवे।

महर्षि दयानंद के अनमोल अमृत वचन

* मनुष्यों को ऐसा विचारना चाहिये कि हमारे शरीर अनित्य और स्थिति चलायमान है। इसे शरीर को रोगों से बचाकर धर्म अर्थ काम मोक्ष का अनुष्ठान शीघ्र करके अनित्य साधनों से नित्य मोक्ष के सुख को प्राप्त होवें। (महर्षि कृत वेद भाष्य, यजु. 12-79)
* मनुष्यों को चाहिये कि सुख से चिरकाल तक जीने के लिये दीर्घ ब्रह्मचर्य का अच्छे प्रकार सेवन कर आरोग्य और धातुओं की समता बढ़ाने से शरीर के बल और विद्या धर्म तथा योगाभ्यास के बढ़ाने से आत्मबल की उन्नति कर सदैव सुख से रहें। (ऋग्वेद 1-155-4)
* जो मनुष्य उत्तम कर्म में शरीर आदि पदार्थों को चलाता है, वह संसार में उत्तम सुख पाता है, और जो परमेश्वर ही की प्राप्ति रूप मोक्ष की इच्छा करके उत्तम कर्म, उपासना और ज्ञान में पुरुषार्थ करता है, वह उत्तम देव होता है। (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका)
* जो मनुष्य सत्य प्रेम भक्ति से परमेश्वर की उपासना करेंगे, उन्हीं उपासकों को परम कृपामय अन्तर्यामी परमेश्वर मोक्षसुख दे के सदा के लिये आनंदयुक्त कर देगा। (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका)
* कण्ठ के नीचे, दोनों स्तनों के बीच में, और उदर के ऊपर जो हृदयदेश है, जिसको ब्रह्मपुर अर्थात् परमेश्वर का नगर कहते हैं, उसके बीच में जो गर्त है, उसमें कमल के आकार वेश्म अर्थात् अवकाशरूप एक स्थान है, और उसके बीच में जो सर्वशक्तिमान् परमात्मा बाहर भीतर एकरस होकर भर रहा है, वह आनन्दस्वरूप परमेश्वर उसी प्रकाशित स्थान के बीच में खोज करने से मिल जाता है। (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका)
* आश्रय लेने के योग्य जो अन्तर्यामी व्यापक परमेश्वर है, उसके प्रकाश और आनन्द में, अत्यन्त विचार और प्रेम भक्ति के साथ इस प्रकार प्रवेश करना कि जैसे समुद्र के बीच में नदी प्रवेश करती है। उस समय में ईश्वर को छोड़ किसी अन्य पदार्थ का स्मरण नहीं करना, किन्तु उसी अन्तर्यामी के स्वरूप और ज्ञान में मग्न हो जाना, इसी का नाम ध्यान है। (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका)
* कारण के सत्त्व, रज और तमोगुण और उनके कार्य पुरुषार्थ से नष्ट होकर, आत्मा में विज्ञान और शुद्धि यथावत् होके, स्वरूपप्रतिष्ठा जैसा जीव का तत्त्व है, वैसा ही स्वाभाविक शक्ति और गुणों से युक्त होके, शुद्ध स्वरूप परमेश्वर के स्वरूप विज्ञान प्रकाश और नित्य आनन्द में जो रहता है, उसी को कैवल्यमोक्ष कहते हैं। (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका)

संकलन- आर.एस. कोठारी, जयपुर

आर्य समाज रेलवे कॉलोनी, कोटा

आर्य समाज रेलवें कॉलोनी द्वारा दिनांक 24 मार्च से 26 मार्च 2013 तक तीन दिवसीय बसन्ती नवसस्येष्ठी पर्व होलिकोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम में पं. वृद्धिचन्द शास्त्री के पौरहित्य में बसन्ती नवसस्येष्ठी यज्ञ का आयोजन आर्य समाज मंदिर रेलव कॉलोनी के प्रांगण में किया गया। यज्ञ में नये अनाज की भुनी हुई बालियों द्वारा विशेष आहुतियां प्रदान की गई। यज्ञ के उपरान्त सत्संग का आयोजन किया गया।

सत्संग में दिल्ली से पधारे हुए आर्य जगत के प्रख्यात भजनोपदेशक पं. दिनेश दत्त आर्य ने अपने सुमधुर भजनों से उपस्थित आर्यजनों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने 'मारने वाला है भगवान बचाने वाला है भगवान' भजन से ईश्वर के महत्व को समझाया साथ ही ऋषि दयानन्द के द्वारा समाज सुधार हेतु किये गये कार्यो को भजनों के माध्यम से प्रस्तुत किया।

वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने कहा कि होली हमें बुराईयों को भस्मीभूत कर अच्छाई को ग्रहण करने की प्रेरणा देती है। व्यक्ति अपने अंदर व्याप्त पशुता के भावों को नष्ट करें व समाज में प्रेम स्नेह का प्रसार करें। होली में व्याप्त कुरीतियां को छोड़कर वैदिक परम्परानुसार होली को मनाया जाना चाहिए।

हाडौती के विद्वान पं. वृद्धिचंद शास्त्री ने कहां कि संस्कारों के अभाव से ही होली में बुराईया आ गई है। कार्यक्रम के अंतर्गत पुरोहित जी की टापरी कोटा में सोनेलाल जी के यहां ग्राम सोगरिया में श्री राम नारायण के घर तथा ग्राम रोटेदा में गेंदालाल के यज्ञमानत्व में पं. हरिदत्त शर्मा के पौरहित्य में देवयज्ञ तथा बसन्ती नवसस्येष्टि यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भजनोपदेशक श्री दिनेश दत्त द्वारा अपने सुमधुर भजनों द्वारा ईश्वर भक्ति पर प्रकाश डाला गया।

आर्य समाज के द्वारा किये गये इस कार्य को उपस्थित ग्रामवासियों द्वारा भूरि प्रशंसा की गई तथा आर्य समाज से जुड़कर समाज व गांव को आगे बढ़ने की बात कही गई।

ाअर्य समाज के इस कार्यक्रम में जिला मंत्री कैलाश बाहेती, श्रीचंद गुप्ता, रामकृष्ण बलदुआ, ओमप्रकाश तापड़िया, श्री वी.आर. त्यागी, श्री ओमदत्त गुप्ता, श्री रघुराज सिंह, डॉ. के.एल [illegible] .एस.दुबे, श्री रामप्रसाद याज्ञिक आदि अनेक महिला पु[illegible] थ।

-ह[illegible] र्मा, प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित। सम्पादक एवं प्रकाशक अमरसिंह आर्य, मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक :
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर - 302004

प्रेषित

विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों मे व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। उनसे संम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।